

# हिंदी पदे

## पद ५९

(राग: यमन – ताल: दादरा)

उसका ही भाल बड़ा है । नहिं बिधीको वरनन जाय ॥ध्रु. ॥ मानिक  
नामका प्रताप । सुनो जो करे यह जाप । सोहि हुवा सुखरूप ।  
उसकु मिला ब्रह्मरूप । वही पाया आपकु आप । उसकु देखत  
धर्म भूप । होवे हृदय बीच काप । उसके सिरवकु भव सांप । नहिं  
उसे जानो आप । उसके दर्शन त्रय ताप नसे । जारे सबहि पाप ।  
क्या कहूँ रूप अनूप ॥१॥ माणिक चरननकी धूल । परी जिनके  
शिरकमल । उसकु भई बपु भूल । चित्त भया बहु विमल । जन्म  
भया तिनका सफल । उस गरे परी मुक्तमाल । टूटा संसृति जंजाल ।  
गया मायामोहमल । उसकु बंदे सुरपाल । और कांपे वह काल ।  
भये षड्रिपु येहि विकल । होते साधुजन सुखल । कहे मनोहर  
गुरुबाल ॥२॥